वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट

- यह सम्मेलन अधिक समावेशी, प्रतिनिधित्व वाली और प्रगतिशील विश्व व्यवस्था की दिशा में हुई प्रगति को जारी रखने के उपायों पर केंद्रित था।
- भारत के पप्रधानमंत्री ने सम्मेलन के दौरान "दक्षिण/ DAKSHIN" का भी उद्घाटन किया।
- यह ग्लोबल साउथ के देशों के लिए ग्लोबल साउथ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस है।
- भारत के प्रधानमंत्री ने ग्लोबल साउथ के लिए 5 'Cs' का भी सुझाव दिया है।
- ये 5 'Cs' हैं: परामर्श (Consultation), सहयोग (Cooperation), संचार (Communication), रचनात्मकता (Creativity) और क्षमता निर्माण (Capacity building)।
- इससे पहले, जनवरी 2023 में भारत ने प्रथम "वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट" की मेजबानी की थी।
- ग्लोबल साउथ के 125 देशों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन की थीम थी- "यूनिटी ऑफ वॉइस, यूनिटी ऑफ पर्पस" ।
- ग्लोबल साउथ" शब्दावली का आशय ऐसे देशों से है, जिन्हें अक्सर 'विकासशील', 'अल्प विकसित' या 'अविकसित' के रूप में संबोधित किया जाता है।
- ग्लोबल साउथ की अवधारणा को 1980 की बैंट लाइन (Brandt Line) से जोड़कर देखा जाता है।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे बहुपक्षीय वैश्विक संगठनों की प्रतिनिधित्व प्रणाली में सुधार करने के लिए सहयोग आवश्यक है।
- सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने में भी आपसी सहयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों के लिए मौसम और जलवायु पर्यवेक्षण हेतु उपग्रह सेवा उपलब्ध कराने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है।

योगिनियां

- इंडिया प्राइड प्रोजेक्ट के तहत योगिनी चामुंडा और गोमुखी की मूर्तियां यूनाइटेड किंगडम से भारत वापस लाई गई हैं।
- इन्हें लोखरी (उत्तर प्रदेश) के 8वीं सदी ई. में निर्मित प्राचीन मंदिर से चुराया गया था।
- योगिनियां पूजा की तांत्रिक पद्धति से संबंधित शक्तिशाली देवियों का एक समूह है।
- इन देवियों की 64 के समूह के रूप में पूजा की जाती है।
- ऐसा माना जाता है कि उनके पास अनंत शक्तियां हैं।
- 64 योगिनियां 64 कलाओं, रतिबंध, भैरव, नायिका और मनुष्य की भावनाओं से जुड़ी हुई हैं।
- योगिनी मंदिरों में ओडिशा का चौसठ योगिनी मंदिर, मध्य प्रदेश का खजुराहो मंदिर परिसर आदि शामिल हैं।

जनजातीय गौरव दिवस

- जनजातीय गौरव दिवस 2021 से प्रत्येक वर्ष 15 नवंबर को मनाया जाता है।
- इसका आयोजन जनजातीय समुदायों के स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों को सम्मान देने के लिए किया जाता है।
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम को संथाल, तमाड़, कोल, भील, खासी, मिज़ो आदि जनजातियों के आंदोलनों ने भी सशक्त किया था।
- 15 नवंबर की तिथि श्री बिरसा मुंडा की जयंती भी थी।
- बिरसा मुंडा (1875-1901)बिरसा मुंडा को 'धरती आबा' के नाम से भी जाना जाता है।
- उनका जन्म छोटा नागपुर पठार क्षेत्र (झारखंड) के खूंटी जिले के उलिहातू में मुंडा जनजाति में हुआ था।
- सामाजिक सुधार: उन्होंने प्रार्थना के महत्त्व, शराब से दूर रहने, ईश्वर में विश्वास रखने और एक आचरण संहिता का पालन करने पर जोर दिया था।
- इन्हीं आदर्शों के आधार पर उन्होंने बिरसाइत मत की शुरुआत की थी।
- आदिवासी लोगों के धर्मांतरण को रोकना भी इसका एक उद्देश्य था।
- उन्होंने स्थानीय अधिकारियों द्वारा जनजातियों के शोषण के खिलाफ 'उलगुलान' (The Great Tumult) नामक आंदोलन शुरु किया था।
- इस आंदोलन के दबाव में ब्रिटिश शासन ने 1908 में छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम पारित किया था।

- अधिनियम ने आदिवासी लोगों से गैर-आदिवासियों को भूमि हस्तांतरित करने पर प्रतिबंध लगा दिया था।
- सरकार ने 'विकसित भारत संकल्प याला' और 'प्रधान मंत्री विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTGs) विकास मिशन' की शुरुआत की।

माउंट एटना ज्वालामुखी

- इटली के सिसिली द्वीप पर स्थित माउंट एटना ज्वालामुखी में फिर से उद्गार शुरू हो गया है।
- माउंट एटना यूरोप का सबसे ऊंचा सक्रिय ज्वालामुखी है।
- यह दुनिया का सबसे सक्रिय स्ट्रेटोवोल्कैनो भी है।
- स्ट्रैटोवोल्कैनो अपेक्षाकृत खड़ी ढाल वाला ज्वालामुखी होता है और शील्ड ज्वालामुखियों की तुलना में अधिक शंक्वाकार होता है।
- इससे चिपचिपा लावा निकलता है, जो आसानी से प्रवाहित नहीं होता है।
- ज्वालामुखी भूपर्पटी में वह छिद्र या दरार होती है, जिसके माध्यम से शैल पदार्थ, शैल के टुकड़े, राख, जलवाष्प तथा अन्य गर्म गैसें धीरे-धीरे अथवा तेजी से उद्गार के समय निकलते हैं।
- ज्वालामुखी धरातल पर और समुद्र, दोनों जगहों पर स्थित हो सकते हैं।
- 'रिंग ऑफ फायर' प्रशांत महासागर में घोड़े की नाल के आकार की एक पट्टी है।
- इसमें कई सक्रिय ज्वालामुखी स्थित हैं। इस क्षेत्र में बार-बार भूकंप आते हैं।
- इस क्षेत्र को परि-प्रशांत मेखला (Circum-Pacific Belt) भी कहा जाता है।
- ज्वालामुखी के 4 मुख्य प्रकार हैं:
  - सिंडर शंकु,
  - मिश्रित या स्ट्रैटोवोल्कैनो,
  - शील्ड ज्वालामुखी और
  - लावा डोम।